-3-

" पार्वक कॉन्सेप्ट

-2.

NOV 2026 "Annihilation of Caste" - Who were they shudras - B.R. Ambedkar

24 tuesday (Analysis from-01)

(328-037) Week 48

N	Monday	30	2	9	16	23
D	Tuesday		3	10	17	24
V	Wednesday		4	11	18	25
2	Thursday		5	12	19	26
0	Friday		6	13	20	27
2	Saturday		7	14	21	28
6	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

- | प्रतिकार |, | भय | उत्पन्न होने पर |

" मनुष्य जब अपने पैरों पर खड़ा होने की प्रयास करता है, तथा यथार्थवादी बन जाती है, कि उसे रूढ़ि को एक ओर फेंक देना चाहिए और सभी कठोर अनैतिक परम्पराओं का पुरजोर तरीके से विरोध करना चाहिए, जिसमें परिवर्तन उस पर्वत संकल्पी है - मंगल सिंह,

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

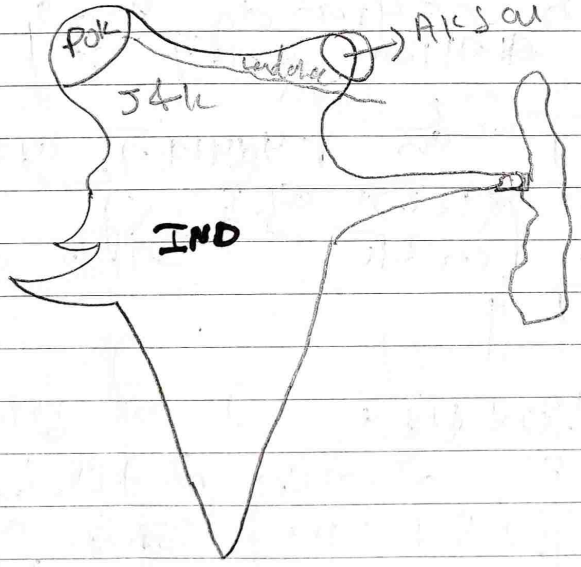

Po

Pi

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25	-	2
Saturday	5	12	19	26	-	0
Sunday	6	13	20	27	-	2
Week	49	50	51	52	53	6

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

- अछूतों के साथ क्रूरता :—
- दूरी से अपवित्रता न 64 & 96 कदम दूर चलना पड़ता था केरल में,
- इत्मादत में पात्र को सौर विधि जाति वाला छोड़ा को बैठने नहीं दिया जाता था। दोड़े घर
- चवदार तालाब → 2 मार्च 1927 ई.)
- "मनुस्मृति" दहने अदालत
- 25 दिसंबर, 1927 ई. → डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा दिए अपने ऐतिहासिक भाषण की।
- मद्रास के न्यायाधीश श्री एम. सत्यनाथ अय्यर द्वारा लाया।
- (मनुस्मृति) के कुछ घातक श्लोक
- अध्याय 8, श्लोक 270 :— यदि कोई शूद्र यानी आज के SC/ST/OBC किसी ब्राह्मण विद्वान को कठोर शब्द बोलता है, तो उसकी जीभ काट लेनी चाहिए।
- अध्याय 10, श्लोक 4 :— शूद्र का सबसे बड़ा धर्म यही है कि वह ब्राह्मणों की सेवा करे।

Ambedkar Book + Annihilation of Caste.

NOV 2026

N						
O	Monday	30	2	9	16	23
V	Tuesday		3	10	17	24
	Wednesday		4	11	18	25
2	Thursday		5	12	19	26
0	Friday		6	13	20	27
2	Saturday		7	14	21	28
6	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

21 saturday
(325-040) Week 47

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00

① The Rise of Dalit Feminism.

मैं ही वो लक्ष्मण हूँ।

यजुर्वेद कहीं न हो
क्योंकि एक ब्राह्मण शूद्र, ब्राह्मण को
काट देता है।

अध्याय २, श्लोक ३१:

① वैश्यों के नाम शुभ होने चाहिए,
लेकिन एक शूद्र का नाम ऐसा
होना चाहिए जो उसे 'गुलाम' और
'सेवा' का भाव दर्शाए।

अध्याय ९, श्लोक ३:
"न स्त्री स्वातन्त्र्यम् अर्हति"
(यानी: महिला कभी स्वतंत्रता के योग्य
नहीं होती।)
बचपन में पिता के अधीन
जवानी में पति के,
और बुढ़ापे में बेटे के अधीन।

22 sunday
(326-039) Week 47

① राष्ट्र में Casteism ② The Indian Express
के अनुसार Delhi में एक बड़े शादी
में मुस्लिम आतिशबाजी किसान पर
निकाह मेहंदी लगना हुआ मुस्त
मुहल्ला

Preface

NOV 2025

friday 20

(324-041) Week 47

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	G
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25		2
Saturday	5	12	19	26		0
Sunday	6	13	20	27		2
Week	49	50	51	52	53	6

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

⊙ शांगल जिला महाराष्ट्र का आखिरी

खाड़ 3Gm$ Construction factory

ई का माल का करते थे अगर ई

गा के लिए जिस दलित बस्ती में

ेम स्नान का महल बना सकते हैं

लेकिन हाथ को स्वयं हस्त में

जगह नहीं दे सकते।

⇒ ⊙ Importance कोई स्वैराचार नहीं

संविधान एक सैद्धान्तिक अनुबंध

को देश करता जिस देश

देश के रूप में देता है —

⊙ Indian Justice Report 2025

① 2018 से नियुक्त 698 हाईकोर्ट जजों

में से सभी 22 SC, 15 ST समुदाय

आते हैं, OBC समुदाय से

" धर्म के क्षेत्र, मोक्ष आत्मा की मुक्ति

का रास्ता है सकता है,

लेकिन राजनीतिक क्षेत्र में मोक्ष

का 'Heavenly' अर्थात स्वर्गिक

नहीं एक ऐसा तंत्र और

आदर्श होना चाहिए की तरह

जीवन है।

⇒ आंबेडकर जी।

NOV 2026

19 thursday

(323-042) Week 47

10 - 3 pm

Preface —.

NOV 2026						
	Monday	30	2	9	16	23
	Tuesday		3	10	17	24
	Wednesday		4	11	18	25
	Thursday		5	12	19	26
	Friday		6	13	20	27
	Saturday		7	14	21	28
	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

" दुनिया की देश का संविधान कितना हो अध्यक्षीय ने अपार देश चलाने वाले लोग। कि देंगे तो का अंतत: पूरा। कि साबित होगा यु

-डा-> अम्बेडकर

" शिक्षित बनो ①
संगठित रहो ②
संघर्ष करो ③

-> अमेरिका अंबेडकर.

" तुम्हें अपनी लड़ाई लड़नी है
तब तुम्हें तुम्हारा अपना मीडिया और अपना नेटवर्क ~~चाहिए~~ होना चाहिए

* Baba साहब का resignation Argument on Internet.

" सत्य विचार को हमेशा आलोचना होती है, होगा खोर झूठ तालियां और वाह वाहियां बटोरती है "

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25	-	2
Saturday	5	12	19	26	-	0
Sunday	6	13	20	27	-	2
Week	49	50	51	52	53	6

NOV 2

wednesday 18

(322-043) Week 47

Page - 01

In the book who were the Shudras -

Acc. to B.R. Ambedkar.

9.00
9.30
10.00 → There was a continuous feud between Shudras & Brahmins.
10.30 In the Indo-Aryan Society.
11.00
11.30
12.00 → As a result of the hatered towards the Shudras and b/w Brahmins,
12.30 Brahmins were refused to perform
1.00 the Upanayana of the Shudras.
1.30
2.00
2.30 → Owing to the denial of Upanyana.
3.00 the Shudras who were Kshatriyas,
3.30 became socially degraded, fell
4.00 below the rank of the
4.30 Vaishyas and thus came to
5.00 form the fourth Varna.
5.30
6.00 Varna,

→ Gospal → [illegible]
→ prevalent → [illegible]

NOV 2026

17 tuesday

(321-044) Week 47

02

N	Monday	30	2	9	16	23
O	Tuesday		3	10	17	24
V	Wednesday		4	11	18	25
2	Thursday		5	12	19	26
0	Friday		6	13	20	27
2	Saturday		7	14	21	28
6	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25	-	2
Saturday	5	12	19	26	-	0
Sunday	6	13	20	27	-	2
Week	49	50	51	52	53	6

NOV 2026

monday 16

(320-045) Week 47

NOV 20

03

From : who were the Shydras. & where they came from.

By : B.R. Ambedkar.

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

• इतिहास के साक्षी हैं कि किसी भी समाज, का जन-कल्याण की सदैव कामना, वह पूरित नहीं कर सका। राम, वो युग में विभाजित था। मनुष्य की तीन वर्ण थी।

* भारतीय इतिहास में तीन जातियां अध्यवर्ग (पुरोहित) क्षेत्र वर्ग (क्षत्रिय) और वैश्य (कृषक) में सीमित थे।

वैश्य क्षत्रिय के संबंध में यह कहा जाता है कि सिद्धान्त ऊपर वर्णन. अनुसार वैश्यों ने पुरुष सूक्त के अनुसार उपयुक्त के अनुसार पर शूद्र से (वैश्य के 10 वें मंडल के 90 वें सूक्त में) यह प्रश्न उठाया कि ब्रह्म के अन्य में वैश्यों के पर-पर विराट कार्य (पर गए हैं? पुरुष सूक्त के रचनाकार ने शूद्रों के लिए अधार पुरुष को कार्य बताया?

NOV 2026

04 20

N	Monday	30	2	9	16	23
O	Tuesday		3	10	17	24
V	Wednesday		4	11	18	25
2	Thursday		5	12	19	26
0	Friday		6	13	20	27
2	Saturday		7	14	21	28
6	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

14 saturday
(318-047) Week 46

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00

• पुरुष सूक्त के प्रत्येक मन्त्र में यह ज्ञात होता है कि उस सूक्त में परम्परा शब्द, धारणा, कर्म आदि की रचना कैसे होती है। विभाजन - उत्पत्ति की दिशा इसमें नहीं है। मन्त्र में ऐक्य सूचना वर्णन स्वाभाविक होता है दूसरे वर्ण में, पुरुष सूक्त की रचनाकार के क्रम में कर्म करके आर्य समाज में वर्ण की उत्पत्ति की विवेचना करना लगता है। इससे स्पष्ट होता है कि पुरुष सूक्त की भूमिका ऐसे वर्ण-भेद की व्यवस्था का वर्ण मात्र रहा है। रचना करने में पुरुष सूक्त का महत्व कम अल्प मात्रा में रहा है।
युक्ति : विरोध प्रकट होता है

15 sunday
(319-046) Week 46

[Imp. Pages]

• 24.
• 23
• 30, 31, 34, 35, 36
इसकी उत्पत्ति
• 49 —
• 52 — Imp, 55 • 60 /

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25	-	2
Saturday	5	12	19	26	-	0
Sunday	6	13	20	27	-	2
Week	49	50	51	52	53	6

05 NO

NOV 2026

friday 13

(317-048) Week 46

ऋग्वेद में पाँच जातियों के सम्बन्ध में स्थापित्व आर्य जाति द्वारा रचित की बात से कहती है.

9.00 राष्ट्र
9.30 • ऋग्वेद (VI 47.4)
10.00 • ८. (VII-111(S2)
10.30
11.00 ये पांच नदी पर मण्डल है
11.30 ~~के~~ पुरुष ने विवाह में दक्ष यम
12.00 ०१ वर्ष, पिदरु, देव, असुर आदि
12.30 (पाप) बताये है
1.00 उपनिषद के अनुसार ये जातियां
1.30 (पुरुष सूक्त में वर्णित) चार वर्ण और
2.00 विभाजित है
2.30 पुरुष सूक्त
3.00 • पुरुष सूक्त पाँचों जातियों की
3.30 उत्पत्ति का वर्णन समान
4.00 करते हैं ?
4.30 • पुरुष सूक्त जातियों के
5.00 ~~श्रेणी~~ विभाजन का पक्षपाती
5.30 नहीं है
6.00

• पुरुष सूक्त क्यों राष्ट्रवाद से अधिक के सामुदायिक को जोड़ने का कारण ?

0650

NOV 2026

12 thursday

(316-049) Week 46

N	Monday	30	2	9	16	23
O	Tuesday		3	10	17	24
V	Wednesday		4	11	18	25
2	Thursday		5	12	19	26
0	Friday		6	13	20	27
2	Saturday		7	14	21	28
6	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

यजुर्वेद का 2-संकलन है।

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

शुक्ल यजुर्वेद — कण्व

वाजसनेयी संहिता (XL 18)

(16 – 22 मंत्र)

पहला पुरुषसूक्त की पुनरुक्त

शतपथ – (वाजसनेयी संहिता)

वाजसनेयी संहिता (XL 28)

का दूसरा संस्करण पुरुष सूक्त सहित

वाजसनेयी संहिता।

कृष्ण यजुर्वेद

• इसके चार संहिता में कुल मंत्रों की संख्या 1875 है।

पहली (IV 310), फिर शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता (XL 22)

तैत्तिरीय संहिता (II 413)

0720

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25	-	2
Saturday	5	12	19	26	-	0
Sunday	6	13	20	27	-	2
Week	49	50	51	52	53	6

NOV 2026

wednesday 11

(315-050) Week 46

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

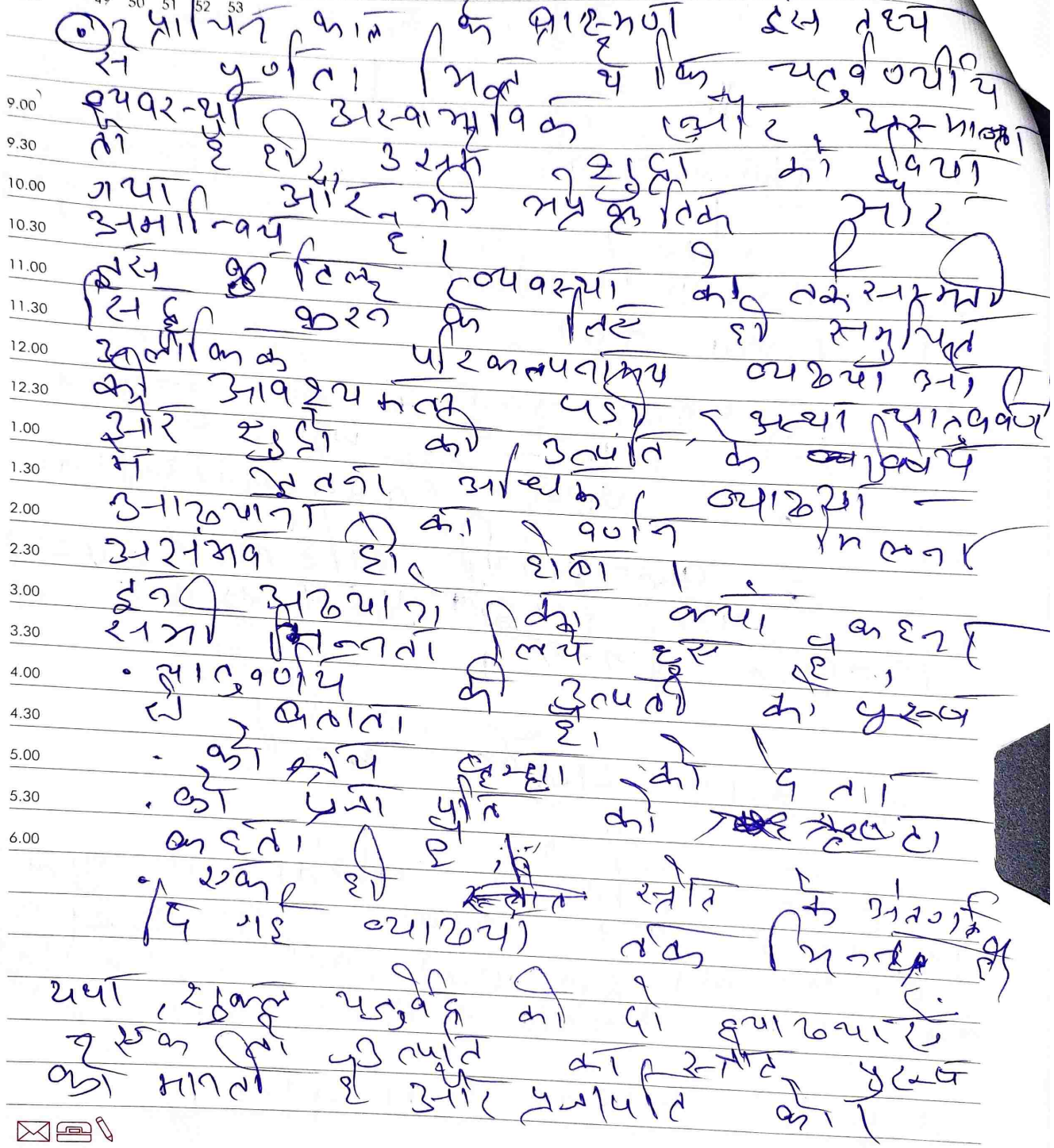

NOV						
	Monday	30	2	9	16	23
	Tuesday		3	10	17	24
	Wednesday		4	11	18	25
2	Thursday		5	12	19	26
0	Friday		6	13	20	27
2	Saturday		7	14	21	28
6	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

08

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

ऋग्वेद के द्वारा प्रजापति का ज्ञान जाना गया है और एक में सूचना का वर्णन को है।

अथर्ववेद चार अध्याय है। एक के द्वारा पुरुष को दूसरे में वर्णन करने के लिए तीसरे में कृत्य को चौथे में वेदात का माध्यम कहा गया है। चौथे व्याख्य का तीन तीन है। मन्त्र है इसका मंत्र समान होने पर भी विवरण भिन्न है।

अतः वेदों को प्रजापति के स्वरूप में माध्यम से व्याख्य एकदम आवश्यक है।

मनुस्मृति 3, 2-19 कहती है।

- ब्राह्मण को क्या से प्रेम करना है उसे को प्राण दण्ड देना चाहिए
- उसे से प्रेम करने पर या सम्बन्ध बनाने पर उसे दूसरे को प्राप्त होने जाने से सम्पत्ति से वंचित होने जाते हैं उसे सजाने से

09 NOV 2026

monday 9

(313-052) Week 46

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	2
Friday	4	11	18	25	-	0
Saturday	5	12	19	26	-	2
Sunday	6	13	20	27	-	6
Week	49	50	51	52	53	

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

આ વિષય પર વિચાર કરો. કામ - માં
કરવા જેવું કંઈ ઉપયોગી
કરવું જોઈએ. કંઈક સર્જનાત્મક કરવું
જોઈએ. કંઈક નવું
કરવું જોઈએ. કંઈક
ઉપયોગી કરવું જોઈએ.
કંઈક સર્જનાત્મક કરવું
જોઈએ. કંઈક નવું
કરવું જોઈએ. કંઈક
ઉપયોગી કરવું જોઈએ.
કંઈક સર્જનાત્મક કરવું
જોઈએ. કંઈક નવું
કરવું જોઈએ. કંઈક
ઉપયોગી કરવું જોઈએ.

• વિષય નિર્માતાઓ જેવી રચના
કરવા જેવું કંઈ નવું
આવ્યું છે. આ
વિષય પર વિચાર
કરવા જેવું કંઈ નવું
સમય પર આવે છે.
આ વિષય પર વિચાર
કરવા જેવું કંઈ નવું
આવે છે. આ વિષય
પર વિચાર કરવા

.11

Page → from → 49 → 10.

NOV 2026

7 saturday
(311-054) Week 45

NOV 2026						
	Monday	30	2	9	16	23
	Tuesday		3	10	17	24
	Wednesday		4	11	18	25
	Thursday		5	12	19	26
	Friday		6	13	20	27
	Saturday		7	14	21	28
	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00

दस्यु और आर्य

- आर्य वैदिक रचना करने आर्य जाति बाहर से आती थी जिसने भारत का अतिक्रमण किया।
- भारत के मूल निवासी दास और दस्यु थे जो आर्य से भिन्न थे।
- आर्य गौर वर्ण के थे। दास तथा दस्यु काले या गहरे रंग के थे।
- आर्यों दास और दस्यु का विभाजन किया।
- दास और दस्यु पराजित होने पर उन्हें अनार्य कहा गया और वे शूद्र कहलाये।
- आर्य रंग के आधार पर भेद-भाव को मानते थे और इसी कारण के उन्होंने चातुर्वर्ण व्यवस्था बनाई, जिसके द्वारा उन्होंने और लोगों को, दास और दस्यु जैसे (काले या गहरे रंग के) लोगों से अलग कर दिया।

8 sunday
(312-053) Week 45

"जाति, उस जन समुदाय को कहते हैं जिसका पूर्वानुमान विशेष लक्षण पाया जाता है"

जैसे: i) सिर की बनावट ii) बालों और आँखों का रंग iii) त्वचा का रंग, आदि iv) आकार।

·01

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	2
Friday	4	11	18	25	-	0
Saturday	5	12	19	26	-	2
Sunday	6	13	20	27	-	6
Week	49	50	51	52	53	

NOV 2026

friday 6

(310-055) Week 45

NOV 20

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

"आर्य"

→ प्रो० मैक्समुलर के अनुसार

• 'अर' और 'अरा' धातु से यह शब्द बना है जिसका अर्थ है जाना। यह शब्द संस्कृत भाषा से अंग्रेजी में लुप्त हो गया है लेकिन ग्रीक लैटिन फ्रेंच जर्मन में "ऐरन" के रूप में आज भी सुरक्षित है अतः आर्य का ऐतिहासिक वास्तविक उच्चारण ऐरन ही सही है "मनुष्यों में श्रेष्ठ" का अर्थ भी जोड़ा गया है आर्य समय के साथ 'अरा' का परिवर्तित रूप है।

अतः 'आर्य' का अर्थ है मुक्ति को जानने वाला।

• आर्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग समस्त वेदों (ऋक्, यजु, साम) में किया गया है।

• आर्य को जाति नहीं बल्कि एक भावना है

• ऋग्वेद में 'आर्य' और 'दास' शब्द का प्रयोग किया गया है अर्थ का प्रयोग 33 बार। यहाँ पर अर्थ - 1. श्रेष्ठ, 2. सम्मानित व्यक्ति, 3 मारा का वेश। और 4 स्वामी वैश्य अवस्था नागरिक - में किया गया है।

NOV 2026

5 thursday

(309 056) Week 45

NOV 2026						
	Monday	30	2	9	16	23
	Tuesday		3	10	17	24
	Wednesday		4	11	18	25
2	Thursday		5	12	19	26
0	Friday		6	13	20	27
2	Saturday		7	14	21	28
6	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

9.00 "आर्य" शब्द का प्रयोग
9.30 जो कि आया है जिसका अर्थ में इसका प्रयुक्त
10.00 नहीं किया गया।
10.30 — x — x —
11.00 यहाँ तक आर्य के बारे में आर्य
11.30 के मूल निवासी होने की बात है
12.00 वह भी असत्य है —
12.30 Page → 56.
1.00
1.30 — x — x —
2.00 • पाश्चात्य विद्वान के मत का अर्थ
2.30 ये है कि अधिकतर इनमें
3.00 विद्वान ने स्वीकार किया
3.30 वास्तव में आर्य विदेशी थे
4.00 मूल निवासी यहाँ के
4.30 — x — x —
5.00 • पूर्व लिखे अनुसार — आर्य मत की पुष्टि
5.30 इस से हमारे इस मत की पुष्टि
6.00 होती है कि पाश्चात्य विद्वानों ने
जिस वाले दृष्टि से ये शब्द
के अर्थ किये थे।
(पूरा की वाक्य Page → पर)

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25	-	2
Saturday	5	12	19	26	-	0
Sunday	6	13	20	27	-	2
Week	49	50	51	52	53	6

·21 → परिचय विद्वान और विद्वान का मत का अध्ययन करें

आर्य के संबंध में

वेदों में आर्य जाति के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है

2. वेदों में ऐसे कोई प्रसंग उल्लेखित नहीं जिस से यह सिद्ध हो सके कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण कर यहां के मूल निवासी दास - दस्यु आदि को विजय किया।

3. आर्य, दास और दस्यु जातियों के संबंध में वेदों में उपलब्ध नहीं है।

4. वेदों में इस मत को पुष्ट करने वाले कोई संकेत नहीं हैं कि आर्य, दासों और दस्युओं से भिन्न रंग के थे।

→ After please consider page 5

— x — x —

इन मंत्रों में निहित साक्ष्य पाश्चात्य मत की परिकल्पना को मिथ्या सिद्ध करता है। यह स्वयंसिद्ध है कि "आर्यों की दो जन-श्रेणियां थीं जो वर्ण में भिन्न थीं तथा एक-दूसरे से शत्रु भाव रखते थीं।" दो आर्य जन के अस्तित्व की धारणा केवल कल्पित नहीं वास्तविक है।

NOV 2026

3 tuesday

(307-058) Week 45

NOV 2026						
	Monday	30	2	9	16	23
	Tuesday		3	10	17	24
	Wednesday		4	11	18	25
	Thursday		5	12	19	26
	Friday		6	13	20	27
	Saturday		7	14	21	28
	Sunday	1	8	15	22	29
	Week	44/49	45	46	47	48

• इसके दो पक्षाय हैं

• पहला पक्षाय मिलकर वेदों की प्राचीनता

9.00 है। ये वेद - संहिता ब्राह्मण है कि वेद
9.30 दो हैं - ऋग्वेद यजुर्वेद अथर्ववेद।
10.00 सामवेद और यजुर्वेद तो ऋग्वेद के
10.30 मिलने स्वरूप मिल हैं (
11.00 यह सर्वविदित सत्य है कि वेद प्राचीन
11.30 है ब्राह्मण। अथर्ववेद को ऋग्वेद
12.00 के समान पवित्र नहीं माना। यही
12.30 ऐसा कारण ऋग्वेद पवित्र और अथर्ववेद
1.00 को अपवित्र कहा गया। इसके
1.30 अलावा यह है कि दोनों वेद आर्यों
2.00 को दो समूह - मित्र जातियों द्वारा
2.30 रचा गये थे। बाद में ये दोनों
3.00 जातियां एक हो गयी तो अथर्ववेद
3.30 को ऋग्वेद के समान ही पवित्र
4.00 माना गया।
4.30
— x — x —
5.00
5.30 रामायण के अनुसार सृष्टि रचना
6.00 जल से शुरू हुई।

ब्रह्मा → मरीचि → कश्यप → विवस्वत →
→ मनु → इक्ष्वाकु → अयोध्या के पहले
राजा।

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25	-	2
Saturday	5	12	19	26	-	0
Sunday	6	13	20	27	-	2
Week	49	50	51	52	53	6

विश्वोत्पत्ति की इन कथाओं की तुलना द्वितीय अध्याय में वर्णित वर्ण विवरण से करने पर निम्नांकित दो मत स्पष्ट होते हैं :-

- एक कथन के अनुसार मनु मनुष्य थे और उनसे सभी प्राणी पैदा हुए और दूसरा देव ब्रह्मा या प्रजापति द्वारा सृष्टि-रचना मानता है।
- एक ऐतिहासिक सत्य है और दूसरा दैविक सत्य।
- एक में प्रलय का वर्णन है परंतु दूसरे में नहीं है।
- एक का लक्ष्य चातुर्वर्ण है तो दूसरे का लक्ष्य समाज के आदि का व्याख्या।

इन सारे विचार के बाद भी हमारे चातुर्वर्ण व्यवस्था के दो अलग-अलग विस्तृत है।

NOV 2026

1 sunday

(305-060) Week 44

N	Monday	30	2	9	16	23
O	Tuesday		3	10	17	24
V	Wednesday		4	11	18	25
—	Thursday		5	12	19	26
2	Friday		6	13	20	27
0	Saturday		7	14	21	28
2	Sunday	1	8	15	22	29
6	Week	44/49	45	46	47	48

Imp.

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

५. पुरुष सूक्त के सिद्धांत

- ब्राह्मण - मुख से
- क्षत्रिय - भुजा से
- वैश्य - जांघों से
- शूद्र - पैरों से उत्पन्न है,

२. मनु के पुरुष का सिद्धांत

- चार वर्ण मनु के वंश। संतान से विकसित हुए

मतलब यह है यह एक सामाजिक विकास की प्रक्रिया थी

→ इन दो विरोधी विचार-मतों पर ध्यान

दोनों में समानता का अंश है दोनों में

~~दोनों~~ - एक अंश प्रकृति-पुरुष - दर्शन

चातुर्वर्ण्य का मानती थी और दूसरी

इस व्यवस्था से विमुख थी।

कुलान्तर में दोनों मिलकर एक हो

गई।

Monday		7	14	21	28	D
Tuesday	1	8	15	22	29	E
Wednesday	2	9	16	23	30	C
Thursday	3	10	17	24	31	
Friday	4	11	18	25	-	2
Saturday	5	12	19	26	-	0
Sunday	6	13	20	27	-	2
Week	49	50	51	52	53	6

1 S
2 M
3 T
4 W
5 T
6 F
7 S
8 S
9 M
10 T
11 W
12 T
13 F
14 S
15 S
16 M
17 T
18 W
19 T
20 F
21 S
22 S
23 M
24 T
25 W
26 T
27 F
28 S
29 S
30 M

न॰ तीसरा वाक्य सर हरबर्ट रिस्ले द्वारा भारतवासियों का वर्ण सर्वेक्षण है। इस के १९०१ में किया गया अनुसार भारतीय आर्य द्रविड़, मंगोल, शकहूण नामक चार जातियों के मिश्रण हैं। परिक्षण का सन् 1936 डा० गुहा ने इस डा० गुहा के अनुसार भारतीय लम्बे सिर वाली और छोटे जातियों के मिश्रण हैं। सिर वाली दो जाति देश में मध्य लम्बे सिर वाली की नाक तथा छोटे निवास करती थी सीमावर्ती क्षेत्र में भारत के विभिन्न भागों इस मत की पुष्टि से प्राप्त मानव-खोपड़ियाँ करती है।

OCT 2026

31 saturday

(304-061) Week 44

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
2	Thursday	1	8	15	22	29
0	Friday	2	9	16	23	30
2	Saturday	3	10	17	24	31
6	Sunday	4	11	18	25	-
	Week	40	41	42	43	44

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

• संक्षेप में भारतीय तथा यूरोपीय विद्वानों जातियों में मैक्डोनियन "और छोटे सिर वाली जाति "अल्पाईन" के वंशज हैं।

→ किन्तु सभी विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि अल्पाईन लोग भी मानक "आर्य" थे। अतः अल्पाईन आर्य थे।

→ क्योंकि पाश्चात्य सिद्धांत एक 'आर्य' जाति की बात करता जब की ऋग्वेद दो भिन्न आर्य जातियों का वर्णन मिलता है। वही इस तथ्य से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि ऋग्वेद के प्रमाणों में साक्ष्य और पाश्चात्य मतों में विरोधाभास है। ऋग्वेद इस विषय में सर्वोत्तम साक्ष्य है अतः इसका प्रतिकूल किसी मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

* यदि हिमालय के निकटस्थ क्षेत्रों के निवासी काले अल्पाईन जाति पहले आर्य थे तो आर्यों के बाहर से आने की अवधारणा गलत सिद्ध हो जाती है।

Monday	30	2	9	16	23	N
Tuesday		3	10	17	24	O
Wednesday		4	11	18	25	V
Thursday		5	12	19	26	—
Friday		6	13	20	27	2
Saturday		7	14	21	28	0
Sunday	1	8	15	22	29	2
Week	44/49	45	46	47	48	6

OCT 2026

friday 30

(303-062) Week 44

OCT 2026

NOVEMBER

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

"दास" और "दस्यु" या तो असभ्य जंगली जातियाँ थीं यह अवैदिक आर्य। उनसे संघर्ष और पराजित होने पर बनाए गए, छोटानागपुर में ये कोलगण संभवतः सुदूर दक्षिण के द्रविड़ कहलाए

→ Shri A.S. Das. Retired

→ तैत्तिरीय ब्राह्मण, तैत्तिरीय संहिता तथा अन्तिम ब्राह्मणों में वृत्र युद्ध को लगभग वही स्थिति बतायी गयी है जैसाकि ऋग्वेद में मिलती है। अन्तिम यह तर्क संगत प्रतीत होता है कि आर्यों द्वारा विजित "दास" और "दस्यु" सभ्य-शत्रु युद्ध में परिणत हो गये।

निष्कर्ष:

1. दास और दस्यु एक ही हैं।
2. युद्ध आर्यों के मूल निवास थे इतर अनार्य थे, तथा
3. युद्ध असभ्य और जंगली थे।

→ वृत्र - इन्द्र, शम्बर, शुरुण, वृत्र और पिप्रु दास और दस्यु कहे गये हैं।

→ दास और दस्युओं को इन्द्र और देवताओं विशेषकर अश्विनी कुमारों का सहयोग बताया गया है।

OCT 2026

29 thursday

(302-063) Week 44

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
	Thursday	1	8	15	22	29
2	Friday	2	9	16	23	30
0	Saturday	3	10	17	24	31
2	Sunday	4	11	18	25	-
6	Week	40	41	42	43	44

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

→ वेद दास। अलग - अलग

ऋग्वेद में दासों का कुछ स्थानों पर और दस्युओं का कुछ स्थानों पर अलग-अलग वर्णन मिलता है यदि दोनों एक होते तो ऐसा क्यों अलग-अलग चित्रित किये जाते?

→ ऐसा कोई साक्ष्य नहीं मिलता जो यह सिद्ध करे कि दस्यु अनार्य जाति थे। इसके विपरीत, पर्याप्त प्रमाण हैं कि दस्यु शब्द का प्रयोग आर्य शत्रु के लिए किया जाता था। इस संदर्भ में महाभारत (शान्ति पर्व, अध्याय 65 श्लोक 23) को देखें।

→ दस्यु शब्द की व्युत्पत्ति

यह कहना कठिन है कि ऐतिहासिक काल में भारतीय, अफगान और भारतीय ईरानी सदा संघर्ष में रत रहे हैं। अतः यह संभव है कि भारतीय आर्यों ने अपने परम शत्रु भारतीय ईरानीयों को ध्वनिवश यदि नाम रखा हो। यदि इस मत को मान लिया जाए तो दस्यु को साक्ष्य के मूल निवासी नहीं माना जा सकता है।

Monday	30	2	9	16	23	NOV
Tuesday		3	10	17	24	
Wednesday		4	11	18	25	
Thursday		5	12	19	26	2020
Friday		6	13	20	27	
Saturday		7	14	21	28	
Sunday	1	8	15	22	29	
Week	44/49	45	46	47	48	

OCT 2026

wednesday 28

(301-064) Week 44

OCT 20

NOVEMBER

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

- Go with Page - no - 72
- 11 → 75

→ राजा के राज्याभिषेक में मुख्य रूप से तीन तत्व थे। उत्तर वैदिक युग में प्रजा के प्रतिनिधि, जो इसे Collate थे राजा की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। राजा प्रमुखता के चित्र करते "हुन्दी रत्नियों" स्वीकृत करता था। यहाँ यह ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण तथ्य है कि इन रत्नियों में एक मुख्य अनुपस्थित होता था। राज्याभिषेक के पश्चात राजा प्रत्येक रत्नी के निवास पर जाता था और उन्हें विशेष उपहार भेंट करता था। (Jayaswal, Hindu Polity, Pages - 200-208)

→ Go with → 78 page.

→ यह तथ्य मनुस्मृति तथा विष्णु स्मृति (x164) के अनुसार अभिषेक के ब्राह्मण का राजा के राज्य में न होने पर राजा का कोई उत्तराधिकारी नहीं होता था जिसका अर्थ है कि मुख्य मंत्री राजा था।

OCT 2026

27 tuesday

(300-065) Week 44

OCT 2026						
	Monday		5	12	19	26
	Tuesday		6	13	20	27
	Wednesday		7	14	21	28
	Thursday	1	8	15	22	29
	Friday	2	9	16	23	30
	Saturday	3	10	17	24	31
	Sunday	4	11	18	25	-
	Week	40	41	42	43	44

शुद्ध क्षत्रिय दो
प्रकार स्वरूप अध्ययन के अनुसार :-
1. शुद्ध आर्य है,
2. शुद्ध क्षत्रिय है, तथा
3. शुद्ध क्षत्रिय का वंशज है। परन्तु आर्य समाज में अनेक तरह की और विचारधारा शुद्ध है।

After this revision page → 29.

हम तीन शुद्धियों की वंशावली निम्न है :-

"ऋग्वेद में शुद्धि"

(VII 18.22) देवव्रत.
↓
पिलवन
↓
शुद्धोदन

(VII 18.23) के अनुसार
पिलवन
↓
शुद्धोदन

(VII 18.25)
द्विवोदास
पिलवन
शुद्धोदन

विष्णुपुराण में सुदास,
सगरी वंश में सुदास,

9.00 – ऋतुपर्ण
9.30 ↓
10.00 — सर्वकर्मा
10.30 ↓
11.00 — सुदास
11.30 ↓
12.00 — सौदास
12.30 ↓
1.00 → मित्रसह.
1.30
2.00 → विष्णु पुराण के सुदास का
2.30 ऋग्वेद के सुदास के कोई संबंध
3.00 नहीं। — में चर्चित वैभवन का
3.30 – महाभारत में चर्चित वैभवन का
4.00 ही ऋग्वेद के सुदास इस
4.30 ही वैभवन का पुत्र होने के
5.00 कारण सुदास का वैभवन में
5.30 कहा गया। ही वैभवन का
6.00 दूसरा नाम दिवोदास व बताया
गया है

OCT 2026

24 saturday
(297-068) Week 43

OCT 2026						
	Monday		5	12	19	26
	Tuesday		6	13	20	27
	Wednesday		7	14	21	28
	Thursday	1	8	15	22	29
2	Friday	2	9	16	23	30
0	Saturday	3	10	17	24	31
2	Sunday	4	11	18	25	-
6	Week	40	41	42	43	44

महाभारत के शान्तिपर्व के प्रासंगिक श्लोकों पर विचार करते हुए प्रो० वेबर कहते हैं—

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00

"पैजवन की एक महत्वपूर्ण कथा का वर्णन है। यूप के लिए पशु है पैजवन" या ~~ऋग्वेद~~ ऋग्वेद में सुदास का विश्वामित्र का संरक्षक बताया है। वह युद्ध था।"

सौभाग्य से महाभारत का पैजवन और ऋग्वेद का सुदास, दो अलग व्यक्ति न होकर एक ही.

सुदास या पैजवन के विषय में निम्नलिखित विवरण मिलता है।

① सुदास न तो दास थे और न आर्य। दास और उसके शत्रु थे (ऋग्वेद VII 83।1)

25 sunday
(298-067) Week 43

इस का अर्थ यह हुआ कि वह वैदिक आर्य था।

• सुदास का पिता दिवोदास प्रद्योतों का पूर्वज था (ऋग्वेद IX 61।2) राजा दिवोदास ने तुर्वस (ऋ० VI 61।1) यदु (VII 19।8), द्रुह्यु (X 69।7)

Monday 30 2 9 16 23
Tuesday 3 10 17 24
Wednesday 4 11 18 25
Thursday 5 12 19 26
Friday 6 13 20 27
Saturday 7 14 21 28
Sunday 1 8 15 22 29
Week 44/49 45 46 47 48
NOV 2026

पारव (ऋ० VI 61 1) अनु
~~(VII 19 9), शब्दार्थ पृ 130 ~~
कोष्ठक — उनकी पुत्र से अनबन
थी। युद्ध कियान (ऋ० x 48), दिवोदास
और तुर्वयुक्त में युद्ध हुआ और
तुर्वयन विजयी हुआ (ऋग्वेद 1 53,
8, VI 18, 13) 1

ऐसे प्रतीत होता है कि युद्ध के समय
इन्द्र दिवोदास के विरुद्ध था तृत्सुदास
के अपने पुरोहित गाधिन को
उनके उपहार दिये थे (ऋ० 1 116 18;
VI 165) 1 भारद्वाज के छल से
किया और वह दिवोदास के
हाथ तुर्वयन से जा मिले (ऋ०
VI 18 13)

सुदास की माता का नाम सुदेवी
बताया गया है (ऋ० 1 112 19) (3)
सुदास राजा था उसका
राज्याभिषेक महर्षि वशिष्ठ ने
किया था।

→ सुदास प्रसङ्ग वसिष्ठ युद्ध का
नायक था। इस युद्ध का वर्णन
ऋग्वेद के सात मण्डल के अनेक
सूक्त में मिलता है.
सूक्त 83 → 10 ऋ।

OCT 2026

22 thursday

(295-070) Week 43

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
	Thursday	1	8	15	22	29
2	Friday	2	9	16	23	30
0	Saturday	3	10	17	24	31
2	Sunday	4	11	18	25	-
6	Week	40	41	42	43	44

- सुक्त - 33
- सुक्त - 19
- सातवे मण्डल सुक्त - 18.

9.00
9.30
10.00 दसराज युद्ध मे "सुदास" के विरुद्ध
10.30 ऋ.८ वाले ऋचा इस प्रकार
11.00 है
11.30 1. शिग्रु
12.00 2. अनु तुर्वसु
12.30 3. द्रुह्यु
1.00 कवष
1.30 4. पुरु
2.00 5. अनु
2.30 6. मत्स्य
3.00 7. भेद
3.30 8. शिग्रु वैकर्ण (दुसरा)
4.00 9. वैकर्ण (दुसरा)
4.30 10. यदु
5.00 11. मत्स्य
5.30 12. पुरु
6.00 13. मलनास
14. अलीन
15. विशानिन
16. अज
17. सिग्रु
18. शिग्रु
19. पक्थ
20. भलानस

21. युद्धयामि
22. भेद
23. देवक मत्स्य
24. उशमन
25. सुतुक
26. उत्तर
27 शुतुद्रि
28. विदथि
29. मत्स्य
30. द्रुह्यु

VS

"सुदास"

Monday	30	2	9	16	23	N
Tuesday		3	10	17	24	O
Wednesday		4	11	18	25	V
Thursday		5	12	19	26	
Friday		6	13	20	27	2
Saturday		7	14	21	28	0
Sunday	1	8	15	22	29	2
Week	44/49	45	46	47	48	6

OCT 2026

wednesday 21

(294-071) Week 43

इस युद्ध का विजेता सुदास था
अपने समय का अनन्यतम शासक
कहलाया। युद्ध का कारण स्पष्ट न
था परंतु ऋग्वेद (७.83.7) में सुदास
के विरोधियों द्वारा राजा को अधमति
कहा गया है, अतः संभावना यह
है कि यह धर्म-युद्ध था।

:) X 134 (ऋग्वेद का मंत्र) → राजा पितवन
- का पुत्र सुदास ने लिखी,

→ अपनी वाग्शैलिता के लिए प्रसिद्ध सुदास
आतिथ्य के नाम से पुकारे जाता
था। ब्राह्मण उसका यशोगान करते थे,
कुल दस राजाओं की सेना के साथ
वह था, ऋग्वेद के दस राजा :-
का दल →

- 1 4 7 6
- 1 6 3 7
- 1 11 2 19
- 7 19 3
- 7 20 2
- 7 25 3
- 7 32 10
- 7 5 3 3
- 7 60 8.

NOVEMBER

OCT 2026

20 tuesday

(293-072) Week 43

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
2	Thursday	1	8	15	22	29
0	Friday	2	9	16	23	30
2	Saturday	3	10	17	24	31
6	Sunday	4	11	18	25	-
	Week	40	41	42	43	44

9.00 ऋग्वेद से हमें यह ज्ञात
9.30 होता है कि उनका ~~प्रारम्भिक~~ वास्तविक
10.00 नाम सुदास था और आर्य था।
10.30 वह राजा था और ऋषि वशिष्ठ
11.00 राजा थे। महाभारत में उसे शूद्र
11.30 बताया गया है जो एकदम नई बात
12.00 शूद्र का आर्य होना, शूद्र का आर्य
12.30 होना? और शूद्र का राजा होना?
1.00 इससे अधिक विश्वासजनक और
1.30 क्या हो सकता है

→ Please Consider Page 91 After this.

2.00
2.30 → ऋग्वेद के साक्ष्यानुसार सुदास का
3.00 सम्बन्ध पुरु, तृत्सु और भरत जातियों
3.30 से था।
4.00 मंत्र → 163-7 / 1307 / 1815 / 7836
7833 / 7833.6 / 616, 4, 6, 1a।
5.00
5.30 इन दो भरत जातियों एक दूसरे से मिली
6.00 हैं। एक दाशराज्ञ भरत है जिनका वर्णन
महाभारत में आता है और ऋग्वेद
में वर्णित मनु के वंशज भरत, जिनके
सुदास थे। इस देश का
नाम ऋग्वेद के "भरत" के नाम
पर "भारत" पड़ा, न कि दाशराज्ञ
भरत के नाम पर। यह समय,
✉ 2104 1-468 किसी ने, ने

→ Please consider → Page - 92.

9.00 → प्रो० वेदवर कहते हैं, 2
9.30 उनाया → कि यद्यपि मैं इन आमंत्रित
10.00 विद्वानों की बात का सम्मान करता हूँ, व आर्य-मान्य
10.30 कोल नदी पात के किन्तु समस्त प्रमाण
11.00 ये ऋग्वेद ---- के अनुसार मेरा मत है कि
11.30 ऋग्वेद आर्य के जाति के जो दूसरे क्षेत्रों के
12.00 आर्यों से पहले ही भारत में आकर
12.30 बस गए थे।

1.00
1.30 → प्रो० जैमिनकर वेदों का उपरोक्त मत है
2.00 मस्तिष्क को लिए साकर रख देता है
2.30 अतः यह स्पष्ट सिद्ध हुआ कि ऋग्वेद
3.00 अपने और ऐतिहासिक थे।
3.30
4.00 → पुरुष सूक्त के अतिरिक्त (अलावा)
4.30 ऋग्वेद ब्राह्मण, और द्वितीय और
5.00 वेदों में वर्ण का उल्लेख कहीं
5.30 पर भी किया गया है किन्तु ऋग्वेद
6.00 वर्ण का पर्यायक वर्ण का पर्यायक
वर्णित कहीं भी नहीं मिलता है इसलिए
यदि ऋग्वेद अलग वर्ण होते तो कोई कारण
नहीं कि ऋग्वेद में उनका उल्लेख
न होता। इसका यह निष्कर्ष निकाला
जा सकता है कि ऋग्वेद काल में
ऋग्वेद का गान करने वाले या पर्यायक
कोई वर्ण नहीं था।

OCT 2026

17 saturday
(290-075) Week 42

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
2	Thursday	1	8	15	22	29
0	Friday	2	9	16	23	30
2	Saturday	3	10	17	24	31
6	Sunday	4	11	18	25	-
	Week	40	41	42	43	44

→ दूसरा साक्ष्य शतपथ ब्राह्मण तथा तैत्तिरीय ब्राह्मण का है। दोनों ब्राह्मण ग्रंथों में केवल तीन वर्ण का वर्णन मिलता है और चौथे वर्ण का वर्णन नहीं दोनों ग्रंथों के प्रथक पृथक दो अलग अलग ब्राह्मण (11.14.11) का पढ़ें।

→ ~~तैत्तिरीय~~ तैत्तिरीय ब्राह्मण (3.11.12.9.2) पढ़ें।

ऋग्वेद, शतपथ, महाभारत और तैत्तिरीय ब्राह्मण उपरोक्त दोनों ग्रंथों में केवल तीन वर्ण का उल्लेख है: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य।

→ अतः दोनों का प्रथक प्रथक चौथा वर्ण दोनों प्रमाणिक नहीं है।

18 sunday
(291-074) Week 42

→ पुरुष सूक्त का (ऋग्वेद) के बाद कौन रचना मानी जाती है।

विभिन्न प्रमाण :—

~~दूसरा सूक्त का मतानुसार~~

१) कौल सूक्त के मतानुसार ऋग्वेद के अनुवाद का आधा और ऋग्वेद समान है।

Monday	30	2	9	16	23	N
Tuesday		3	10	17	24	O
Wednesday		4	11	18	25	V
Thursday		5	12	19	26	
Friday		6	13	20	27	2
Saturday		7	14	21	28	0
Sunday	1	8	15	22	29	2
Week	44/48	45	46	47	48	6

ऋग्वेद पहले पारिवारिक शैली में लिखा गया था।

9.00
9.30
10.00 पं० मैक्समूलर के अनुसार इसके मण्डल
10.30 क्रमशः नए गए। तथ्य के विपरीत, कि
11.00 ऋतुओं का क्रमिक वर्णन है। इसमें यह
11.30 शरद् और हेमन्त
12.00 इसमें ऋग्वेद की एक मात्र मंत्र जिसमें
12.30 छः, इसके नवीन होने का प्रमाण इसके
.00 तीनों का पूरक होना है। उदाहरण के
.30 लिए मंत्र Duplicate नहीं है। उसी
.00 प्रकार "वसन्त" का उल्लेख वैदिक
.30 कविता को शैशवावस्था में नहीं मिलता।
.00 वसन्त का केवल ऋग्वेद (x/14)
.30 में शरद, हेमन्त, वसन्त के क्रमिक वर्णन
.00 में मात्र एक बार आया है।
30
.00 प्रो० वेबर का कहना है कि ब्राह्मण
ग्रन्थों में पुरुष सूक्त का कोई
संदर्भ न पाया जाना यह सिद्ध
करता है कि यह ऋग्वेद के मंत्रों में
जोड़ दी गयी है।

OCT 2026

15 thursday

(288-077) Week 42

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
	Thursday	1	8	15	22	29
2	Friday	2	9	16	23	30
0	Saturday	3	10	17	24	31
2	Sunday	4	11	18	25	-
6	Week	40	41	42	43	44

• केवल यजुर्वेद की दो तरह तीन संहिताओं मिलते हैं, क्योंकि अथर्ववेद में पुरुष सूक्त का कोई उल्लेख नहीं है.

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

ये अलग यह (पुरुष सूक्त) दिखाया है वेद का हिस्सा है जगह मुख्य मंत्र में मिलता लेकिन ऐसा नहीं है असली यह बाद में जोड़ा गया माना गया है.

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि —

यह केवल यजुर्वेद की तैत्तिरीय, वाजसनेयी संहिताओं में पुरुष सूक्त का कोई उल्लेख नहीं है, जबकि अथर्ववेद में यह है कि यह सूक्त संहिताओं के बाद की रचना है और बाद में जोड़ा गया है।

ये पुरुष सूक्त ऋग्वेद और अथर्ववेद में केवल एक ही उल्लेख है जो इस मत को पुष्ट करता है कि सूक्त की रचना बाद हुआ का है।

Monday	30	2	9	16	23	N
Tuesday		3	10	17	24	O
Wednesday		4	11	18	25	V
Thursday		5	12	19	26	
Friday		6	13	20	27	2
Saturday		7	14	21	28	0
Sunday	1	8	15	22	29	2
Week	44/40	45	46	47	48	6

OCT 2026

wednesday 14

(287-078) Week 42

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

(3) विमल वेदा। रचिता। के रचित पुरुष सूक्त का प्रतिष्ठा की दृष्टि से। नहीं देखते थे। अत्यधिक व संक्षिप्त में अत्यधिक व संक्षिप्त में परिवर्तन स्वतंत्रता पूर्व काट छांट संशोधित, परिवर्तन न करते।

इन तर्कों से पैर मेल्सम कर अंत विद्वान के इस मत को पुष्टि होती कि पुरुष सूक्त ऋग्वेद के बाद की रचित है।

-Please consider page 96 - last.

→ अंत संभव है कि पुरुष सूक्त ऋग्वेद का अंश हो। या तदपि यदि ऋक्पूर्व ऋग्वेद से अलग रख पर रखा गया है तो पुरुष सूक्त पुरुषसूक्त के विषय को ब्राह्मण ग्रंथ से परवर्ती रचा गया हो।

पुरुष सूक्त का दृश्य विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि पुरुष सूक्त बाद की रचना जो कालान्तर में ऋग्वेद का अंश बन गयी है तथा ब्राह्मण समाज में यज्ञादि में चार वर्ण की व्यवस्था ने थी।

NOVEMBER

OCT 2026

13 tuesday

(286-079) Week 42

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
2	Thursday	1	8	15	22	29
0	Friday	2	9	16	23	30
2	Saturday	3	10	17	24	31
6	Sunday	4	11	18	25	-
	Week	40	41	42	43	44

→ "रुद्र शब्द ऋग्वेद और कालान्तर में अथर्व-दूसरे वर्ग के गिरक्ष चतुर्थ वर्ग वेद, यह स्मरण किया और स्मरण का उपाधि :- देवे व

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00

प्र. रुद्र राजा सुदास और ब्राह्मण श्रेष्ठ वशिष्ठ का संघर्ष एक प्रत्यक्ष का प्रमाण है

11.30
12.00 → Please consider page - 105.
12.30
1.00 → Please consider page → 110.
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

उ. इससे यह बात है कि इन संघर्ष उपाख्यानों के परिप्रेक्ष्य में "रुद्र" का पूर्ण मूल्यांकन नहीं किया गया। इस का प्रमुख कारण यह रहा है कि "ब्राह्मण और क्षत्रिय के मध्य संघर्ष" के से विमुक्त संघर्ष वास्तव में ब्राह्मण और रुद्र मध्यम हुआ संघर्ष हुआ। सुदास निहित द्रव्य से रुद्र थे "अन्य राजाओं को रुद्र न कहकर इक्ष्वाकु वंश का बताया गया है। ऋग्वेद के अनुसार सुदास इक्ष्वाकु वंशीय था। अतः, निश्चयात्मक यह कहा जा सकता है कि ब्राह्मण से कलह-संघर्ष करने वाले समी राजा रुद्र थे।

Monday	30	2	9	16	23	N
Tuesday		3	10	17	24	O
Wednesday		4	11	18	25	V
Thursday		5	12	19	26	2
Friday		6	13	20	27	0
Saturday		7	14	21	28	2
Sunday	1	8	15	22	29	6
Week	44/49	45	46	47	48	

OCT 2026

monday 12

(285-080) Week 42

→ शूद्र, वर्णों का एक वर्ग था।

→ इसे यह सिद्ध हुआ कि इतनी से वर्णों का कर्तव्य हुआ। प्रत्येक फलस्वरूप उनको पराभव हुआ। उस पराभव जन्य पतन के कारण ही वह अपने दूसरे वर्ण से अधिक से गिर कर समाज का चौथा वर्ण शूद्र था।

→ पुराने काल में सत्य काम जाबाल ने कहा था कि मनुष्य का चुनाव उस वर्ण उसके गुणों के आधार पर जाना जाता है।

→ एक मत यह है कि संयुक्त भारत में मुसलमान के आक्रमण हुए के बाद ही संयुक्तता के बिखर गए हैं। मुसलमानों ने सदा भारत में बौद्ध धर्म के कमजोर के लिए नष्ट करना के उपाय से उन्हें अंतिम - हमला द्वारा पाकिस्तान पर अधिक विद्वान विभाजित किया।

NOVEMBER

10 saturday

(283-082) Week 41

OCT 2026						
O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
2	Thursday	1	8	15	22	29
0	Friday	2	9	16	23	30
2	Saturday	3	10	17	24	31
6	Sunday	4	11	18	25	-
	Week	40	41	42	43	44

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00

उस समय तक सिंह किला जा चुका था।

1) बहादुर ने आपसी के ~~किसी~~ दूसरे वर्ग चोरियां के एक वर्ग शुद्ध के पीतल पर समाज के चौथा वर्ग बनाया।

2) शुद्धि के पतन के निर्मित बाधाएं हुआ। अपनायी गई तकनिक थी उनके उपनयन बंद करवा दिया।

3) ब्राह्मणों ने यह सब शुद्ध राजाओं के उनके साथ किये गये अत्याचार उत्पीड़न अपमान आदि से दुखी होकर बदले के भावना किया।

11 sunday

(284-081) Week 41

.१६ महाभारत के आदिपर्व में सृष्टि निर्माण की वंश-परंपरा

OCT 2026

friday 9

(282-083) Week 41

Monday	30	2	9	16	23	NOV
Tuesday		3	10	17	24	
Wednesday		4	11	18	25	
Thursday		5	12	19	26	2026
Friday		6	13	20	27	
Saturday		7	14	21	28	
Sunday	1	8	15	22	29	
Week	44/49	45	46	47	48	

मारीचि
(ऋषि कश्यप के एक कर्त्ता)

प्रजापति

आदित्यगण

विवस्वत

मनु

यम

(मनु के 10 पुत्र थे)

इक्ष्वाकु	नरिष्यन्त	नाभाग	इक्ष्वाकु	करुष	शर्याति	प्रशाध
नाभ-नेदि	इला	शाल	- 10 पुत्र.			

1. पुरुरवा इला का पुत्र था और मनु का पुत्र था। मनु पुत्र इक्ष्वाकु का पुत्र। इक्ष्वाकु के 2 पुत्र थे। नाभ-नेदि का था। इक्ष्वाकु का ज्येष्ठ पुत्र था। वंश इला का था। मनु का पुत्र था तथा इक्ष्वाकु

OCT 2026

8 thursday

(281-084) Week 41

OCT 2026					
Monday		5	12	19	26
Tuesday		6	13	20	27
Wednesday		7	14	21	28
Thursday	1	8	15	22	29
Friday	2	9	16	23	30
Saturday	3	10	17	24	31
Sunday	4	11	18	25	-
Week	40	41	42	43	44

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

राज्य की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं, यह स्वागत योग्य है।

मुख्य कारण जिसकी वजह ब्राह्मणों ने तय किया कि इसी स्थान पर ब्राह्मणों की मांगों पर विचार और दूरदर्शिता के आधार पर प्राप्त गौरव को गंभीर आघात पहुंचाया था। अतः उनके चुनौतियों का स्वीकार न करना। धीरेंद्र के लिए अस्वीकार्य था। लेकिन उन्होंने इस चुनौती का डटकर सामना किया। उन्होंने ब्राह्मणों के कलहों और पर आघात किया। वेणा ने ब्राह्मणों को दंडनायक के स्थान पर अपनी पूजा करने को बाध्य किया। पुरुषवा ने उनकी धन, संपत्ति लूट ली। नहुष ने ब्राह्मणों को रस्सी में जोतकर नगर में घुमाया, ययाति ने अपने कुल पुरोहित को अपने कुल परंपरागत संस्कार करने से रोक दिया। इन्द्रद्युम्न ने उनके आगे जाकर पुरु कुल पुरोहित वशिष्ठ के पुत्र शक्ति को नियुक्त किया था।

Monday	30	2	9	16	23	N
Tuesday		3	10	17	24	O
Wednesday		4	11	18	25	V
Thursday		5	12	19	26	2
Friday		6	13	20	27	0
Saturday		7	14	21	28	2
Sunday	1	8	15	22	29	6
Week	44/49	45	46	47	48	

OCT 2026

wednesday 7

(280-085) Week 41

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

Please consider - 147

"कृपे महोदये कृत धामशार-२ २७७:

द्वितीय (II) पद 123 के अनुसार,

सदृढ़ अर्थात सम्य दृढ़ ; असदृढ़ दृढ़

असम्य दृढ़ और, अनिर्धारित और

अथवा २ निर्धारित २ यह नाद सु पुरु

को देखत दूस नामवर्ग गूंथ ।

यह मत अस्वीकार है । सदृढ़ दृढ़

अनिर्धारित सदृढ़ आर्य दृढ़ दृढ़ है

लेकिन असदृढ़ दृढ़ और अनिर्धारित

दृढ़ हिन्दु दृढ़ है ।

OCT 2026

6 tuesday

(279-086) Week 41

OCT 2026					
	Monday		5	12	19	26
	Tuesday		6	13	20	27
	Wednesday		7	14	21	28
	Thursday	1	8	15	22	29
	Friday	2	9	16	23	30
	Saturday	3	10	17	24	31
	Sunday	4	11	18	25	-
	Week	40	41	42	43	44

9.00
9.30
10.00
10.30
11.00
11.30
12.00
12.30
1.00
1.30
2.00
2.30
3.00
3.30
4.00
4.30
5.00
5.30
6.00

यह संक्षेप में इस प्रकार है

1. शूद्र सूर्यवंशी आर्य जातियों में एक कुल या वंश थे

2. भारतीय आर्य समाज में शूद्र का स्तर क्षत्रिय वर्ण था

3. एक समय आर्यों में केवल तीन वर्ण - ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ही थे। शूद्र अलग वर्ण न होकर क्षत्रिय वर्ण का ही एक अंग थे।

4. शूद्र राजाओं और ब्राह्मणों के मध्य निरन्तर संघर्ष हुआ जिससे ब्राह्मणों का अत्याचार, उत्पीड़न अपमान सहन पड़ा।

5. शूद्रों के अत्याचार - उत्पीड़न से त्रस्त ब्राह्मणों ने द्वेष - वश उनका उपनयन बंद कर दिया।

6. उपनयन (यज्ञोपवीत) के विरोध से शूद्र का समाज में अपमान हुआ और वे अपने स्तर से पतित हुए उनका स्तर वैश्यों से भी निम्न हो गया। अन्तत परिणति यह हुई कि वे समाज का [illegible] वर्ग हो गए।

Monday	30	2	9	16	23	NOV
Tuesday		3	10	17	24	
Wednesday		4	11	18	25	
Thursday		5	12	19	26	2026
Friday		6	13	20	27	
Saturday		7	14	21	28	
Sunday	1	8	15	22	29	
Week	44/49	45	46	47	48	

आम्बेडकर जी कहते हैं :-

1. मेरा सिद्धांत महाभारत के हिंसा रूपक मात्र प्रसंग पर आधारित है जिसमें पैजवन को रुद्र कहा गया

2. पैजवन और सुदास एक ही व्यक्ति थे।

3. पैजवन का रुद्र के रूप में वर्णन महाभारत के एक मात्र श्लोक के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी नहीं मिलता। इसलिए केवल इस आधार पर स्थापित सिद्धांत - मत को स्वीकार किया जा सकता है।

⇒ ऋग्वेद में पैजवन को रुद्र बताया और पैजवन और सुदास एक ही व्यक्ति के नाम थे - केवल यही सिद्धांत - मत मत एक मात्र आधार नहीं है बल्कि अन्य भी है -

प्रथम तो यह कि शतपथ ब्राह्मण और तैत्तिरीय ब्राह्मण ग्रंथों में यह स्पष्ट वर्णित है कि केवल तीन ही वर्णिक थे तथा रुद्र का अलग वर्णन न था।

दूसरा रुद्र शिव का और मंत्री थे और दूसरा यह कि प्राचीन काल में रुद्रों को उपनयन का अधिकार था।

OCT 2026

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
	Thursday	1	8	15	22	29
2	Friday	2	9	16	23	30
0	Saturday	3	10	17	24	31
2	Sunday	4	11	18	25	-
6	Week	40	41	42	43	44

3 saturday
(276-089) Week 40

विषय से संबंधित प्रमुख पद्य लिखिए।

:- यह कहा जाता है कि शूद्र अनार्य थे और आर्यों के शत्रु थे। यदि यह सत्य है तो क्या कारण है कि ऋग्वेद और अथर्ववेद के रचनाकार प्रायः शूद्र का गुणगान किया? वे शूद्रों को कैसा पात्र कहां बताया था इत थे?

:- यह भी कहा जाता है कि शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार न था। इसे सुनते ही शूद्र सुदास ने ऋग्वेद की रचना की थी?

:- बताया जाता है कि शूद्र यज्ञ कर सकते थे वे इसके अधिकारी न थे तब सुदास ने अश्वमेध यज्ञ कैसे किया? यदि ऐसा था भी तो सत्यार्थ प्रकाश में यज्ञ करने वाले शूद्रों को अभिवादन करने की विधि का विधान क्या है?

4 sunday
(277-088) Week 40

:- यह कहा जाता है कि शूद्रों को उपनयन का अधिकार न था तो विवाद क्यों? कहीं और इस संस्कार गणपति में यह उल्लेख क्यों कि शूद्र उपनयन के अधिकार के पात्र हैं?

Monday	30	2	9	16	23	NOV
Tuesday		3	10	17	24	
Wednesday		4	11	18	25	
Thursday		5	12	19	26	2026
Friday		6	13	20	27	
Saturday		7	14	21	28	
Sunday	1	8	15	22	29	
Week	44/49	45	46	47	48	

9.00 यह भी कहा जाता है कि
9.30 शूद्र सम्पत्ति के उत्तराधिकार का, दास्य से
10.00 मुक्ति अथवा वे उससे वंचित थे। यदि
10.30 इसे सत्य प्रमाण भी लिया जाय, तब
11.00 मनुस्मृति और कौन संहिताओं में शूद्रों के
11.30 धार्मिक और वैधानिक क्या बताया जाया
12.00 है?
12.30 1- शूद्रों का राज्य विकल्पी अन्न के
1.00 उपयोग बताया गया है। फिर मनुस्मृति
1.30 में शूद्र राज्यसेवा की उल्लेख
2.00 क्या है?
2.30 2- शूद्रों का कर्तव्य - इन तीनों वर्णों
3.00 ब्राह्मण क्षत्रिय और
3.30 वैश्य की सेवा कहा गया है।
4.00 उस वर्ण में शूद्र रखा कैसे हुए?
4.30 न्यायपंचायत न सुशासन तथा अन्य
5.00 सेवक शूद्र राजाओं का वर्णन क्या
5.30 किया?
6.00 3- यदि शूद्रों वेदाध्ययन, उपनयन और
यज्ञ का अधिकार नहीं था, तो उसे
यह अधिकार क्यों नहीं दिया गया?

4- उपनयन करान, वेद पढ़न और यज्ञ
करान का अधिकार केवल ब्राह्मण
को है। शूद्रों का उपनयन, वेदाध्ययन
और पूर्ण निश्चित रूपेण ब्राह्मणों के

OCT 2026

1 thursday

(274-091) Week 40

O	Monday		5	12	19	26
C	Tuesday		6	13	20	27
T	Wednesday		7	14	21	28
2	Thursday	1	8	15	22	29
0	Friday	2	9	16	23	30
2	Saturday	3	10	17	24	31
6	Sunday	4	11	18	25	-
	Week	40	41	42	43	44

लिए के अवसर थे। यदि
के सादृश्यता से काम लेते और
9.00 उन्हें यह अधिकार-अवसर देते
9.30 तो उन्हें पर्याप्त दक्षिण मिलती। ऐसा
10.00 करने से उनके कोई हानि न थी। साथ
10.30 ही उनकी आजीविका आय में कुछ भी
11.00 कमी न होती। ऐसा होने पर भी
11.30 शिक्षण ने शुद्धों को अलग न करने
12.00 का संकल्प कर लिया।

12.30

1.00 • पुनश्च, यदि शुद्धों का उपनयन, वेदा-
1.30 ध्ययन और यज्ञ का अधिकार न था
2.00 तब शिक्षण अपने विशेषाधिकार को
2.30 एक पत्र उन्हें यह अधिकार देने
3.00 अंगीकृत करने सकता था। और-तो, यह
3.30 पत्र शिक्षण को व्यक्तिगत इच्छा
4.00 पर क्यों नहीं लिख दिया गया? इन्हें
4.30 निर्देश (शिक्षण द्वारा दीक्षित) क्यों
5.00 किया। पढ़ा करने-कराने वाले शिक्षण के
5.30 लिए दुर्ग का प्रावधान क्यों किया गया?

6.00

OCT 2026

Month-In-View

10

Monday	30	2	9	16	23	NOV
Tuesday		3	10	17	24	
Wednesday		4	11	18	25	
Thursday		5	12	19	26	
Friday		6	13	20	27	
Saturday		7	14	21	28	
Sunday	1	8	15	22	29	
Week	44/45	45	46	47	48	

1 T — Brahmanas – ब्राह्मण ग्रन्थ :- 4 वेद - R/Y/S/A

2 F — R → • Aitarey Brahman • Kaushitaki Brahmana

3 S — Y • Shatpatha Brahman. • Taittiriya Brahmana.

4 S — S • Panchvimsha Brahman. • Jaminiya Brahmana.

5 M — • A → • Gopatha Brahmana.

6 T — → Purva Mimansa → ऋषि जैमिनी

7 W — → Uttara Mimansa → (Vedanta) → (Moksha)

8 T — → Mahakavya → महाकवि ऋषि वाल्मीकि

9 F

10 S

11 S

12 M

13 T

14 W

15 T

16 F

17 S — 18 Mahapuranas.

1. Brahamey Purana
2. Padma Purana
3. Vishnu Purana
4. Shiva Puran
5. Bhagavat Purana.
6. Narad Purana
7. Markandeya Purana
8. Agni Purana
9. Bhavishya Purana.
10. Brahma Vaivarta
11. Linga Purana.
12. Varaha Purana.
13. Skanda Purana.
14. Vaman Purana.
15. Kurma Purana.
16. Matsy Purana.
17. Garuda Purana.
18. Brahmanda Purana

18 S

19 M

20 T

21 W

22 T

23 F

24 S

25 S

26 M

27 T

28 W

29 T

30 F

31 S

OCTOBER

NOVEMBER

T 2026

My Questions./Doubt.

notes

Record the list of things you might want to do.

» यह पढ़ने के बाद मेरे कुछ सवाल

① मुलतः दुई दार्शनिक आर्यन वर्तमान में कहां और किस स्थिती में है, (समाज)

② यदी उन आर्या दुई को पुस्तक, दुई कोन से में उल्लेखित 'धर्म शास्त्र' के खण्ड-द्वितीय-1 123' अथवा पेज -'70ल' को देख, के अनुसार सद्दुई अर्थात सभ्य दुई जिन्हे आर्यकाल में के मुलतः आर्य कहा वे आज समाज के किस अवस्था में, वही असद्दुई विपरीत असभ्य दुई दिन्हे, उन्हो दिन्हे दुई ने बताया वह अभी किस अवस्था में है?